STUDY IQ PUBLICATIONS

प्रथम संस्करण

भारत की कला एवं संस्कृति

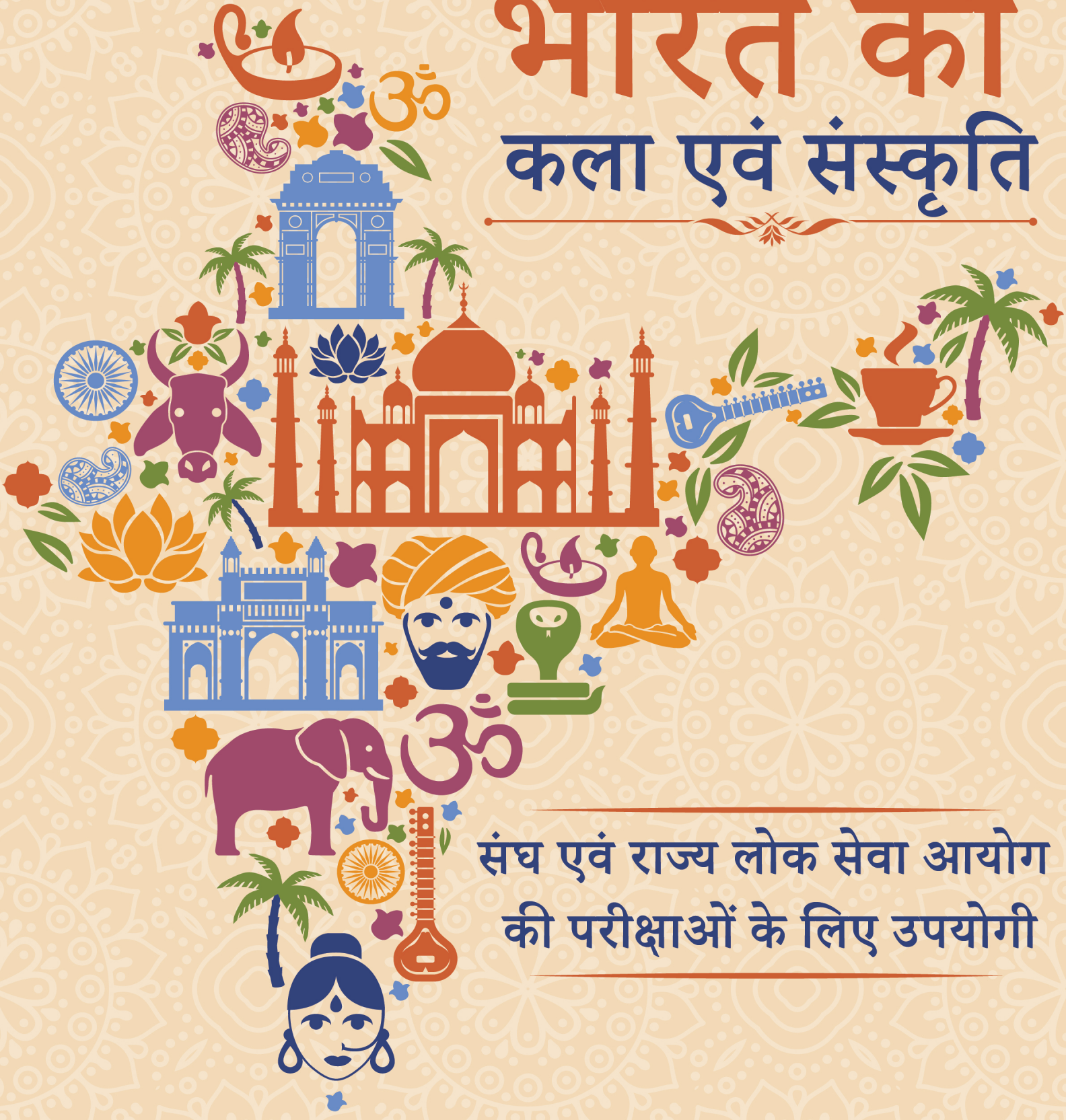

संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के लिए उपयोगी

संस्थापक की कलम से

प्रिय साथियों,

हमारी पिछली किताबों (भारत का भूगोल, भूगोल तथ्य एवं सिद्धांत, भारत की राजव्यवस्था तथा आधुनिक भारत का इतिहास) को मिली शानदार प्रतिक्रियाओं के लिए हम आपको विनम्रतापूर्वक धन्यवाद देना चाहते हैं। हमारी किताबें लॉन्च होने के बाद से ही यूपीएससी सेगमेंट में अमेजन और फ्लिपकार्ट के लिए बेस्ट सेलर लिस्ट में हैं।

संघ लोकसेवा आयोग के लिए सर्वोत्कृष्ट, हमारी पूर्व की किताबों को मिली भारी सकारात्मक प्रतिक्रिया से प्रेरणा लेते हुए, हम सभी छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करने के अपने मिशन की दिशा में एक और कदम आगे बढा लगा रहे हैं। स्टडी आईक्यू पब्लिकेशन आपको हमारी पुस्तक 'भारत की कला एवं संस्कृति' का पहला संस्करण प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा है।

यह पुस्तक उन चिंताओं और चुनौतियों को ध्यान में रखकर बनाई गई है, जिनका सामना छात्रों को सिविल सेवा की तैयारी के दौरान करना पड़ता है। छात्र अक्सर भ्रमित होते हैं कि क्या अध्ययन करना है, कितना अध्ययन करना है, किसी विषय के लिए आवश्यक ज्ञान की गहराई और आयोग द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार। इन सबसे ऊपर, समेकित अध्ययन सामग्री की अनुपस्थिति और कई स्रोतों से सूचना हमारे छात्रों की तैयारी में बाधा डालती है।

यह पुस्तक इन समस्याओं से निपटने और छात्रों के ज्ञान के आधार में सुधार करने, उनकी तैयारी के दौरान उनके कीमती समय की बचत करने और उनके सामने आने वाली कई शैक्षणिक गलतफहमियों को दूर करने का एक ईमानदार प्रयास है।

इस पुस्तक की प्रमुख विशेषताएं:

- इस पुस्तक का उद्देश्य यूपीएससी की वर्तमान प्रवृत्तियों और पैटर्न के आधार पर आपकी तैयारी को केंद्रित और प्रासंगिक, पुनरीक्षण-अनुकूल और अप-टू-डेट बनाना है।
- यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की आवश्यकताएं इस पुस्तक का विशेष फोकस हैं।
- हमने यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधानी बरती है कि सामग्री स्पष्ट और आसानी से समझ में आने वाली हो, ताकि छात्र अपने लाभ के लिए अवधारणाओं को सीख सकें और याद कर सकें।
- जहां भी आवश्यक हो, हमने छात्रों को मुख्य परीक्षा से जुड़ी सभी मौलिक अवधारणाओं को समझने में मदद करने के लिए प्रासंगिक उदाहरण, ऐतिहासिक मामले और तालिकाओं को शामिल किया है।
- पूरी इमानदारी के साथ आपको, आपकी सिविल सेवा परीक्षा की, स्टडी आईक्यू टीम तैयारी में सर्वश्रेष्ठ होने की कामना करती है, और हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक आपकी इस अश्वमेध यात्रा में आपकी सहायता अवश्य करेगी।

Happy Learning!!

Mohit Jindal, IIT-Bombay
Co-Founder, Study IQ Education,
Mentoring UPSC CSE Aspirants for past 7 years

विषय सूची विस्तृत

1. भारतीय वास्तुकला 1
   - 1.1 भारतीय वास्तुकला के अध्ययन का महत्व 1
   - 1.2 भारतीय वास्तुकला के चरण 1
     - प्राचीन काल (2500 ई.पू.-1200 ईस्वी) 1
     - मध्यकाल (1200 ईस्वी - 1757 ईस्वी) 2
     - आधुनिक काल (1757 ईस्वी- अद्यतन) 2
   - 1.3 प्राचीन काल 2
   - 1.4 सिंधु घाटी सभ्यता 2
   - 1.5 मौर्य वास्तुकला 6
     - स्तूप 6
     - स्तंभ 7
     - गुफा वास्तुकला 8
   - 1.6 मौर्योत्तर वास्तुकला 9
     - शैल-कृत (कर्तित) गुफाएँ 9
     - स्तूप 11
     - जैन वास्तुकला तथा बौद्ध वास्तुकला के मध्य प्रमुख अंतर 12
   - 1.7 मंदिर स्थापत्यकला 14
   - 1.8 मंदिर वास्तुकला का विकास 14
     - गुप्त काल 14
     - मंदिर वास्तुकला की विभिन्न शैलियाँ 16
     - नागर शैली 16
     - द्रविड़ शैली 20
     - वेसर शैली 21
   - 1.9 प्रारंभिक मध्ययुगीन हिंदू वास्तुकला 23
     - पाल और सेन वास्तुकला शैली 24
   - 1.10 भारत के बाहर के मंदिर 24
   - 1.11 मध्यकालीन वास्तुकला 25
     - गुलाम वंश 26
     - खिलजी राजवंश 27
     - तुगलक वंश 28
     - लोदी राजवंश 28
     - मुगल वास्तुकला 28
   - 1.12 प्रांतीय वास्तुकला शैलियाँ 32
     - मालवा शैली 32
     - जौनपुर शैली 33
     - बीजापुर या दक्कन शैली 33
     - बंगाल शैली 33
     - कश्मीरी शैली 34
     - विजयनगर वास्तुकला 34
   - 1.13 आधुनिक वास्तुकला 34
     - पुर्तगाली प्रभाव 34
     - फ्रांसीसी प्रभाव 35
     - ब्रिटिश प्रभाव 35

2. भारत में मूर्तिकला 39
   - 2.1 भारत में मूर्तिकला का विकास 39
     - प्राचीन काल 39
     - पूर्व मध्यकाल 50
     - मध्यकाल (1200 ई.- 1757 ई.) 51
     - आधुनिक काल (1857-1947 के बाद) 53
     - स्वतंत्रता के बाद (1947 के बाद) 53
   - 2.2 मृदभांडो का महत्व 54

3. मृदभांड 54
   - 3.1 मृदभांडो का विकास 55
     - नवपाषाण युग (10000 ईसा पूर्व) 55
     - ताम्र पाषाण युग (4500-2000 ईसा पूर्व) 55
     - हड़प्पा सभ्यता (3300-1500 ईसा पूर्व) 57
     - वैदिक युग (1500-500 ईसा पूर्व) 57
     - महापाषाणिक युग (300 ईसा पूर्व-100 सीई) 58
     - मौर्य काल (321 ईसा पूर्व-185 ईसा पूर्व) 58
     - कुषाण काल (100 सीई-400 सीई) 58
     - गुप्त काल (400 सीई-500 सीई) 59
     - तुर्क-मुगल और राजपूत काल (1200 सीई से आगे) 59
   - 3.2 आधुनिक भारत में पाए जाने वाले प्रमुख मृदभांडो की सूची 59

4. भारतीय चित्रकला 61
   - 4.1 भारत में प्राक्-ऐतिहासिक चित्रकारी 61
     - ऊपरी पुरापाषाण कालीन चित्रकला (40000-10000 ई.पू.) 61
     - मध्य पाषाण कालीन चित्रकला (10000-4000 ईसा पूर्व) 62
     - ताम्रपाषाण कालीन चित्रकला 62
   - 4.2 भारतीय चित्रकला का वर्गीकरण 63
     - भित्ति चित्रकला 63
     - बाघ गुफा चित्रकला 65

- लघु चित्रकला 68
- प्रारंभिक लघुचित्र 68
- अपभ्रंश चित्रकला शैली 69
- लघुचित्रों का संक्रमण काल 69
- दिल्ली सल्तनत के दौरान लघु चित्रकला 69
- मुगल युगीन लघु चित्रकारी 69

4.3 भारत में चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ 71
- राजस्थानी चित्रकला शैली 71
- मेवाड़ चित्रकला शैली 72
- मारवाड़ चित्रकला शैली 72
- हाड़ौती चित्रकला शैली 72
- ढूँढाड़ चित्रकला शैली 73
- किशनगढ़ चित्रकला शैली 73
- पहाड़ी चित्रकला शैली 73
- बशोली चित्रकला शैली 74
- कांगड़ा चित्रकला शैली 74
- रागमाला चित्रकला 74
- जम्मू या डोगरा चित्रकला शैली 75
- गुलेर चित्रकला शैली 75
- कुल्लू-मंडी चित्रकला शैली 75
- दक्षिण भारत की लघु चित्रकला 76
- मुगल, राजस्थानी, तंजौर, फारसी चित्रकलाओं का तुलनात्मक विश्लेषण 77

4.4 आधुनिक चित्रकला शैली 78
- कंपनी चित्रिकारी 78
- बाजार चित्रकला 78
- बंगाल चित्रकला शैली 79
- क्यूबिस्ट चित्रकला शैली 79
- प्रगतिशील कला समूह 80

4.5 लोक चित्रकला 80

5. भारतीय हस्तशिल्प 86

5.1 भारतीय हस्तशिल्प का वर्गीकरण 86
- कपड़ा हस्तशिल्प 86
- कढ़ाई शिल्प 87
- कांच के बने पदार्थ 91
- हाथीदांत नक्काशियों 91
- चाँदी के शिल्प 91
- कांस्य शिल्प 92
- काष्ठ शिल्प 93
- खिलौने 94
- पत्थर के पात्र 96
- फर्श डिजाइन और कालीन 96
- चर्म उत्पाद 96

5.2 भारतीय अर्थव्यवस्था में हस्तशिल्प की भूमिका 97

5.3 हस्तशिल्प क्षेत्र में चुनौतियां 97

6. भारतीय संगीत 100

6.1 भारत में संगीत का इतिहास 100
- प्राचीन भारत 100

6.2 प्राचीन ग्रंथों में संगीत का स्थान 100

6.3 भारतीय संगीत से संबंधित प्रमुख शब्दावली 101
- राग 101

6.4 राग में अन्य महत्वपूर्ण शब्दावली 101
- समय 102
- थाट 102
- रस 102
- ताल 102

6.5 भारतीय संगीत का वर्गीकरण 102

6.6 इसके प्रमुख घराने शामिल हैं- 104

6.7 अर्ध शास्त्रीय हिंदुस्तानी 104
- कर्नाटक संगीत 105

6.8 भारत में लोक संगीत 107
- शास्त्रीय और लोक संगीत का संगम 109

6.9 आधुनिक संगीत 110

6.10 वाद्ययंत्र 111

6.11 भारत में संगीत के विकास के लिए संस्थान 112

7. भारतीय नृत्य 114

7.1 भारत में नृत्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 114

7.2 शास्त्रीय नृत्य 114
- भरतनाट्यम 114
- कुचिपुड़ी 115
- कथकली 115
- मोहिनीअट्टम 116
- ओडिसी 116
- मणिपुरी 117
- सत्रिया नृत्य 118

7.3 लोक नृत्य 119

7.4 मणिपुरी संकीर्तन 120

8. भारतीय रंगमंच का विकास 122

8.1 परिचय 122

8.2 नाट्य रूप की उत्पत्ति 122

8.3 रंगमंच का विभाजन 122

8.4 शास्त्रीय/प्राचीन संस्कृत रंगमंच 123
- प्रमुख नाटककार तथा उनकी रचनाएँ 123

- शास्त्रीय संस्कृत नाटकों की विशेषताएँ 123
- संस्कृत रंगमंच के पतन के कारण 124
- आनुष्ठानिक रंगमंच रूप 125
- मनोरंजन रंगमंच रूप 126
- दक्षिण भारत के रंगमंच 129

8.5 आधुनिक रंगमंच का विकास 131
- आधुनिक रंगमंच पर स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव 132

8.6 निष्कर्ष 132

9. भारत की पुतली कला 134

9.1 भारत में पुतली कला की उत्पत्ति 134

9.2 भारत में पुतली कला के प्रकार 134
- स्ट्रिंग/धागा पुतली 135
- छाया पुतली 137
- दस्ताना पुतली 138
- रॉड /छड़पुतली कला 139
- आदिवासी कठपुतली कला 140

9.3 पुतली कला के पतन के कारण 140

10. भारतीय सर्कस 142

10.1 भारत में प्रमुख सर्कस कंपनियाँ 142

10.2 भारत में सर्कस उद्योग का पतन 143

11. भारत में मार्शल आर्ट 144

11.1 भारत में मार्शल आर्ट का संक्षिप्त इतिहास 144

11.2 प्राचीन ग्रंथों में मार्शल आर्ट का उल्लेख 144

11.3 भारत में मार्शल आर्ट के विभिन्न प्रकार 144

12. भारत की भाषाएँ 150

12.1 भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण 150
- 1. भारोपीय परिवार / इंडो-आर्यन ग्रुप 151
- 2. द्रविड़ समूह 153
- द्रविड़ भाषाओं का उप-भाग 153
- 3. चीनी-तिब्बती समूह 154
- 4. ऑस्ट्रिक समूह 155
- 5. नेग्रोइड समूह 156
- 6. अन्य भाषाएं 156
- इंडो-आर्यन और द्रविड़ समूह की भाषाओं के बीच अंतर 156

12.2 भारत में लिपियां 156
- सिंधु लिपि 156
- ब्राह्मी लिपि 157
- गुप्त लिपि 158
- खरोष्ठी लिपि 158
- वट्टेलुट्टू लिपि 158
- कदंब लिपि 159
- ग्रंथ लिपि 159
- शारदा लिपि 159
- गुरुमुखी लिपि 160
- देवनागरी लिपि 160
- मोड़ी या मोडी लिपि 160
- उर्दू लिपि 161

12.3 भारत की आधिकारिक भाषाएँ 161
- राज्यों द्वारा आधिकारिक भाषाओं की सूची 162
- संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा आधिकारिक भाषाओं की सूची 162

12.4 भारत में शास्त्रीय भाषाएं 163
- शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त होने से लाभ 163
- शास्त्रीय भाषाओं को समर्पित संस्थान 164

12.5 भारत में संकटग्रस्त और विलुप्त भाषाएँ 164
- भारत की पांच विलुप्त भाषाएँ 165
- भारत की 42 अति संकटग्रस्त भाषाएँ 165
- भाषाओं पर संकट के कारण 165
- सरकार द्वारा की गई पहल 166

12.6 क्या भारत में कोई राष्ट्रीय भाषा है? 167

13. भारत में धर्म 169

13.1 भारत में धर्मों का वर्गीकरण 169

13.2 हिन्दू धर्म 169
- उत्पत्ति और संक्षिप्त इतिहास 169
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 169
- हिन्दू धर्म के पवित्र ग्रंथ या पुस्तकें 170
- हिन्दू धर्म के तहत प्रमुख संप्रदाय 171
- हिन्दू धर्म में प्रमुख आंदोलन 172
- हिन्दू धर्म का विश्व पर प्रभाव 173

13.3 बौद्ध धर्म 173
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 174
- चार बौद्ध परिषद 174
- बौद्ध धर्म के प्रमुख संप्रदाय/ उप-संप्रदाय 175

13.4 जैन धर्म 177
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 177
- जैन धर्म के महत्वपूर्ण सिद्धांत 177
- प्रमुख संप्रदाय/उप-संप्रदाय 178
- जैन परिषद/संगीति 178
- बौद्ध धर्म और जैन धर्म का तुलनात्मक विश्लेषण 178

13.5 सिख धर्म 179

- उत्पत्ति और संक्षिप्त इतिहास 179
- सिख धर्म के दस गुरु 179
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 180
- प्रमुख संप्रदाय/उप-संप्रदाय 180

13.6 इस्लाम 180
- उत्पत्ति और संक्षिप्त इतिहास 180
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 180
- पवित्र ग्रंथ या पुस्तकें 181
- पवित्र स्थान (तीर्थयात्रा) 181
- प्रमुख संप्रदाय/उप-संप्रदाय 181
- इस्लाम में प्रमुख आंदोलन 181

13.7 ईसाई धर्म 182
- उत्पत्ति और संक्षिप्त इतिहास 182
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 182

13.8 पारसी धर्म 182
- उत्पत्ति और संक्षिप्त इतिहास 182
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 183
- पवित्र ग्रंथ या किताबें 183

13.9 यहूदी धर्म 183
- संक्षिप्त इतिहास 183
- पवित्र ग्रंथ या पुस्तकें 183
- प्रमुख उप-संप्रदाय 183

13.10 भारत में अन्य धर्म 184

14. भारतीय साहित्य 186

14.1 साहित्य की शैलियाँ 186

14.2 साहित्य के प्रकार 186

14.3 उपदेशात्मक और कथात्मक ग्रंथ के बीच अंतर 186

14.4 प्राचीन भारत में साहित्य 186

14.5 वेद 186
- उप-वेद 189
- ब्राह्मण 189
- आरण्यक 190
- उपनिषद 190

14.6 महाभारत और रामायण 191

14.7 शास्त्रीय संस्कृत साहित्य 192

14.8 पाली और प्राकृत में साहित्य 194

14.9 बौद्ध साहित्य 194
- बौद्ध धर्म का प्रामाणिक साहित्य 194
- बौद्ध धर्म का गैर-प्रामाणिक साहित्य 195
- अन्य बौद्ध साहित्यिक ग्रंथ 195
- संस्कृत में अन्य बौद्ध साहित्य 195

14.10 जैन साहित्य 196
- जैन आगम 196
- कुछ अन्य महत्वपूर्ण जैन रचनाएँ हैं 197

14.11 सिख साहित्य 197

14.12 पारसी साहित्य 198

14.13 द्रविड़ साहित्य 199
- तमिल साहित्य 199
- मलयालम सहित्य 200
- तेलुगु साहित्य 200
- कन्नड़ साहित्य 201

14.14 मध्यकालीन साहित्य 202
- फारसी 202
- उर्दू 203
- हिंदी साहित्य 204

14.15 आधुनिक साहित्य 205
- बंगाली साहित्य 205
- असमिया साहित्य 205
- ओडिया साहित्य 206
- गुजराती सहित्य 206
- राजस्थानी साहित्य 206
- सिन्धी साहित्य 206
- कश्मीरी साहित्य 207
- पंजाबी साहित्य 207
- मराठी सहित्य 208

15. भारतीय दर्शन 210

15.1 भारतीय दर्शन की विशेषताएं 210

15.2 भारतीय दर्शन का विकास 210
- वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व) 210
- महाकाव्य काल (600 ईसा पूर्व - 200 ईस्वी) 210
- सूत्र काल (200 ईस्वी के बाद - ईसा युग की पहली शताब्दी) 210
- रुढ़िवादी या पांडित्य काल (सूत्र काल से 17वीं शताब्दी ईस्वी तक) 211
- आधुनिक काल (17वीं शताब्दी के बाद) 211

15.3 भारतीय दर्शन की विचारधाराएँ 211
- रूढ़िवादी संप्रदाय 212

16. भारत में कैलेंडर 220

16.1 कैलेंडरों के प्रकार और प्रयोग की जाने वाली प्रणाली 220
- सौर कैलेंडर 220
- चंद्र कैलेंडर 220

- चंद्र-सौर कैलेंडर 220
- भारतीय कैलेंडर के विभिन्न प्रकार 221
- विक्रम संवत, शक संवत, हिजरी और ग्रेगोरियन का तुलनात्मक विश्लेषण 223

16.2 भारतीय (राष्ट्रीय) कैलेंडर 224
- पृष्ठभूमि 224

17. भारतीय सिनेमा 226

17.1 भारतीय सिनेमा का इतिहास 226
- मूक फिल्मों का युग (1919-1931) 226
- मूक फिल्मों की विशेषताएँ 226
- आजादी के पूर्व अमूक (बोलती/टॉकीज) सिनेमा (1931-1947) 227
- आजादी के बाद का सिनेमा (1948-वर्तमान) 227
- आजादी के बाद के सिनेमा की विशेषताएँ 228

17.2 दक्षिण भारतीय सिनेमा 229

17.3 भारतीय सिनेमा का महत्त्व 230

17.4 भारतीय फिल्मों का विनियमन 231
- विवादास्पद फिल्में और उनसे सम्बंधित मुद्दे 231
- भारतीय चलचित्र अधिनियम, 1952 231

18. भारत में त्यौहार तथा मेले 233

18.1 भारत में त्यौहार 233

18.2 भारत के राष्ट्रीय त्यौहार 233
- गणतंत्र दिवस 233
- स्वतंत्रता दिवस 233
- गाँधी जयंती 233

18.3 धार्मिक त्यौहार 233
- हिंदू त्यौहार 234
- मुस्लिम त्यौहार 235
- सिख त्यौहार 235
- ईसाई त्यौहार 236
- जैन त्यौहार 236
- बौद्ध त्यौहार 236
- सिंधी त्यौहार 236
- पारसी त्यौहार 237

18.4 भारत में राज्यवार त्यौहारों की सूची 237

18.5 भारत के फसल उत्सवों की सूची 243

18.6 भारत में मेले 244

18.7 त्यौहारों और मेलों का महत्व 245
- भारत में पर्यटन महोत्सव से जुड़ी चुनौतियाँ 246
- सरकार की पहल- 246

19. मूर्त सांस्कृतिक विरासत 247

19.1 सांस्कृतिक विरासत का महत्व 247

19.2 मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का विरोधाभास 247

19.3 मूर्त सांस्कृतिक विरासत क्या है? 248

19.4 मूर्त सांस्कृतिक विरासत का महत्व 248

19.5 मूर्त सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण 249
- अंतर्राष्ट्रीय विकास 249

19.6 यूनेस्को की मूर्त विश्व विरासत स्थलों की सूची 249

19.7 नामित स्थलों की कानूनी स्थिति 250

19.8 भारत में यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल 250
- राज्यवार सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत स्थलों की सूची 250

19.9 अंतर-क्षेत्रीय प्राकृतिक विरासत 267

20. अमूर्त सांस्कृतिक विरासत 269

20.1 अमूर्त सांस्कृतिक विरासत 269
- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की विशेषताएँ 269

20.2 यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची 270
- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को सूची में भारतीय तत्व 270
- भारत में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए सरकार की पहल 277

21. कानून और संस्कृति 280
- अनुच्छेद 29 280
- अनुच्छेद 49 280
- अनुच्छेद 51क (च) 280

21.1 प्राकृतिक विरासत के संरक्षण के लिए विधायी प्रावधान 280
- AMSAR अधिनियम या प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्व स्थल और अवशेष अधिनियम 1958 280
- प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904 281
- पुरावशेष (निर्यात नियंत्रण) अधिनियम, 1947 281
- लोक अभिलेख अधिनियम, 1993 281

21.2 संस्कृति मंत्रालय 281
- राष्ट्रीय विरासत शहर विकास और वृद्धि योजना (हृदय) 282
- एक विरासत अपनाएं अपनी धरोहर, अपनी पहचान 282
- तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्द्धन अभियान (प्रशाद) 282
- स्वदेश दर्शन योजना 282
- कला संस्कृति विकास योजना 282

- संग्रहालय का विकास 282
- पुस्तकालयों और अभिलेखागार का विकास 283
- पांडुलिपियों पर राष्ट्रीय मिशन 283

22. भारत में सिक्का प्रणाली 284

22.1 मुद्रा की आवश्यकता 284

22.2 सिक्कों के अध्ययन का महत्व 284

22.3 भारत में सिक्का प्रणाली का विकास 285

- आहत मुद्राओं की खोज 285

22.4 प्राचीन भारत में सिक्के 285

- महाजनपद के आधार पर 285
- प्राचीन भारतीय राजवंशों के सिक्के 287
- दक्षिण भारतीय सिक्के 288

22.5 मध्यकालीन भारत के सिक्के 290

- दिल्ली सल्तनत 290
- खिलजी राजवंश 291
- तुगलक वंश 291
- विजयनगर साम्राज्य 292
- मराठा संघ 293
- अवध प्रांत 293
- मैसूर 294
- सिक्ख 294
- हैदराबाद 295

22.6 स्वतंत्र भारत में सिक्का प्रणाली 295

- अवरुद्ध श्रृंखला/ Frozen series (1947-1950) 296
- आना श्रृंखला 296
- नया पैसा (सिक्का) या दशमलव श्रृंखला 297
- पैसा (सिक्का) श्रृंखला (1964 के बाद से) 298
- नया मूल्यवर्ग 300
- हस्त मुद्रा श्रृंखला 300

23. सांस्कृतिक संस्थान 301

23.1 भारत के प्रमुख सांस्कृतिक संस्थान 301

- 1. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण / Archaeological Survey of India (ASI) 301
- 2. राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण/ National Monument Authority (NMA) 302
- 3. सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र/Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) 302
- 4. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद/ Indian Council for Cultural Relations (ICCR) 302
- 5. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र Indira Gandhi National Centre for Arts (IGNCA) 303
- 6. ऑलइंडिया रेडियो / All India Radio (AIR) 303
- 7. नेहरू मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय / Nehru Memorial Museum and Library (NMML) 304
- 8. भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार/ National Archives of India 304
- 9. साहित्य अकादमी/Sahitya akademi 304
- 10. संगीत नाटक अकादमी/ Sangeet Natak Akademi 305
- 11. ललित कला अकादमी / Lalit Kala Akademi 305
- 12. फिल्म समारोह निदेशालय/ Directorate of Film Festivals 306
- 13. भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद/ Indian Council for Historical Research 306
- 14. कला और विरासत के लिए भारतीय राष्ट्रीय न्यास/Indian National Trust for Art and Cultural Heritage (INTACH) 306
- 15. पाँडुलिपियों के लिए राष्ट्रीय मिशन / National Mission for Manuscripts (NMM) 307
- 16. भारतीय शिल्प परिषद/ The Crafts Council of India (CCI) 307

24. पुरस्कार और सम्मान 308

24.1 नागरिक पुरस्कार 308

- भारत रत्न 308
- कुछ देशों के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 309
- पद्म पुरस्कार 309

24.2 राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य संबंधी पुरस्कार 310

- ज्ञानपीठ पुरस्कार 310
- साहित्य अकादमी पुरस्कार 310
- सरस्वती सम्मान 311
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य संबंधी पुरस्कार 312

24.3 पत्रकारिता में राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार 312

- रामनाथ गोयनका पुरस्कार 312
- पत्रकारिता में उत्कृष्टता के लिए राजा राम मोहन राय पुरस्कार 312
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पत्रकारिता में पुरस्कार 312

24.4 खेल और साहसिक कार्य संबंधी पुरस्कार 312

- खेल रत्न पुरस्कार 313
- अर्जुन पुरस्कार 313
- द्रोणाचार्य पुरस्कार 313
- मेजर ध्यानचंद पुरस्कार 313
- मौलाना अबुल कलाम आजाद ट्रॉफी 313
- राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार 313
- तेनजिंग नोर्गे राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार 314

24.5 फिल्म संबंधित पुरस्कार 314
- राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 314
- दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 314
- ब्रिक्स फिल्म महोत्सव पुरस्कार 315

24.6 भारत के अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार 315
- इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार 315
- गांधी शांति पुरस्कार 315

प्रतिदर्श पेज

विशेषताएँ: इस स्थल के साथ कई अद्वितीय विशेषताएँ जुड़ी हुई हैं।

- दुर्ग और निचले नगर के बीच एक मध्य नगर था। यह विशेषता अन्य आईवीसी स्थलों में अनुपस्थित थी।
- लेकिन अनूठी विशेषता जो इसे अन्य स्थलों से अलग करती है, वह है इसका जल संचयन पद्धति। दो मौसमी धाराओं ने इस शुष्क भूमि को पानी प्रदान किया, लेकिन साल भर पानी सुनिश्चित करने के लिए जलाशयों की स्थापना की गई। इसके अलावा, इस क्षेत्र में चट्टानों को काटकर बनाए गए कुएँ भी देखे जा सकते हैं।

मौर्य वास्तुकला

चंद्रगुप्त मौर्य ने 322 ईसा पूर्व में नंद वंश के धनानंद को हराकर चाणक्य की मदद से मौर्य वास्तुकला और मौर्य राजवंश की स्थापना की। इसने भारतीय इतिहास में एक नए युग को चिह्नित किया, क्योंकि पहली बार, उपमहाद्वीप में एक अखिल भारतीय शासन स्थापित किया गया था। मौर्य काल अपनी विस्तारवादी नीतियों और प्रशासनिक ढाँचे के लिए जाना जाता है, लेकिन इस अवधि के अलावा बड़े पैमाने पर वास्तुकला की दुनिया में नए ढाँचे, मुख्य रूप से उपमहाद्वीप में स्तूप और स्तंभ जोड़े गए।

स्तूप

ये बुद्ध और अन्य भिक्षुओं के अवशेषों पर निर्मित अर्धगोलाकार टीले (गुम्बद) हैं। बड़े पैमाने पर, बौद्ध धर्म में रूपाँतरण के बाद मौर्य साम्राज्य के महान अशोक (268-232 ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान पूरे भारत में स्तूपों का निर्माण शुरू हुआ। उनके शासन से पहले, केवल 8 या 10 स्तूपोंमें बुद्ध के अंतिम संस्कार के अवशेष थे।

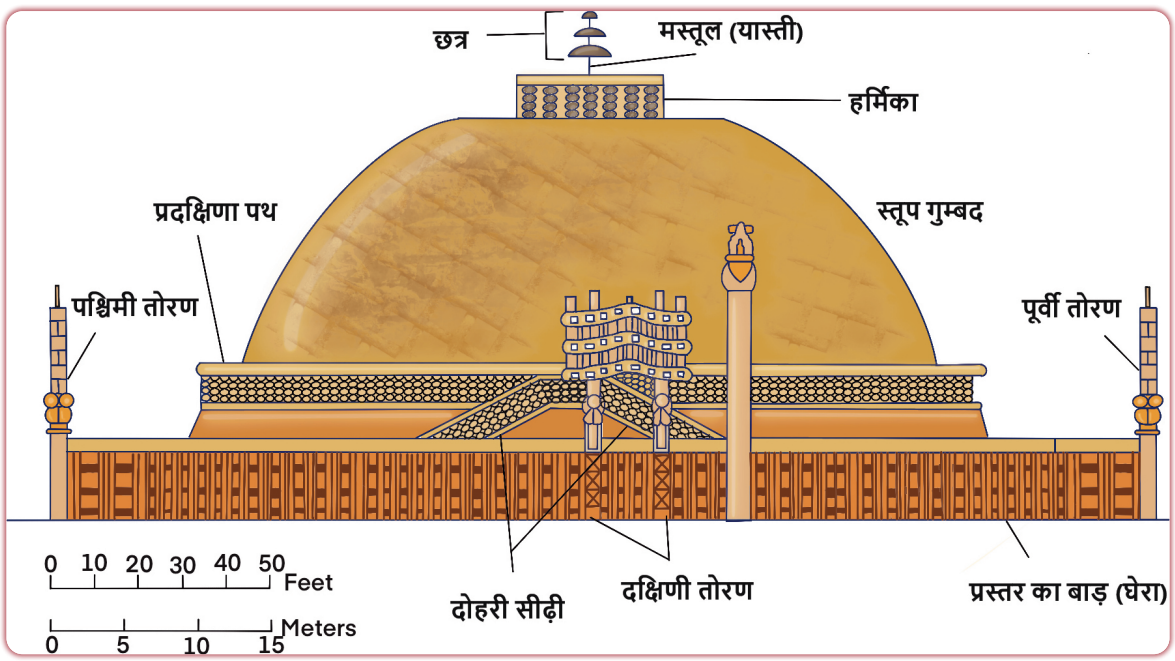

सांची स्तूप का मूल स्केच

स्तूप की विशेषताएँ

वे टीले के आकार की संरचनाएँ हैं जिनमें कई भाग शामिल हैं, जैसे कि

- **अंड:-** यह अर्धगोलाकार गुंबद है, जिसका निर्माण बुद्ध के अवशेषों पर किया गया है।
- **हर्मिका:-**यह अंड के शीर्ष पर स्थित होता है, जिसमें एक सजावटी वर्गाकार छज्जा है।
- **छत्र:** इसमें बौद्ध धर्म के तीन रत्नों का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन पत्थर शामिल हैं: बुद्ध, धम्म और संघ।
- **वेदिका:-**पूरा स्तूप लकड़ी या पत्थर की रेलिंग (घेरा) से घिरा हुआ होता है जिसे वेदिका कहा जाता है।
- **तोरण:-**वे स्तूप के चारों ओर औपचारिक द्वार हैं और जातक कथाओं सहित कई रचनाओं और कहानियों के साथ इसकी चर्चा की जाती है।

© Study IQ Publications

1. इस गुफा में शैल कला, पेट्रोग्लिफ्स और जैन चित्र हैं। भित्ति चित्र गुफाओं की छतों और दीवारों पर भी देखे जा सकते हैं।
2. इन भित्ति चित्रों को जैन भिक्षुओं द्वारा चित्रित किया गया था जो गुफाओं में निवास कर रहे थे। इन चित्रों को बनाने के लिए फ्रेस्को और टेम्परा दोनों तकनीकों का इस्तेमाल किया गया था।
3. इन गुफाओं की दीवारों पर पौधों और हंसों के चित्रलिपि सुशोभित थे। गुफा की दीवारों पर तमिल-ब्राह्मी में शिलालेख भी देखे जा सकते हैं।
4. इन चित्रों में अस्थथिक पालकों (आठ कोनों की रक्षा करने वाले देवता) और जैन धर्म की कहानियों को दर्शाया गया है। आठ कोनों की रक्षा करने वाले देवता हैं अग्नि, वायु, कुबेर, इंद्र, यम, निरुथी और वरुण।

सित्तनवासल गुफा चित्रकला

सित्तनवासल चट्टानों को काटकर बनाया गया गुफा मंदिर तमिलनाडु राज्य में स्थित है। सित्तनवासल या चित्तनवासल गुफा चित्र पहली शताब्दी ईसा पूर्व से 10वीं शताब्दी ईस्वी तक के हैं जो जैन धर्म पर आधारित हैं। ये चित्र बाघ और अजंता चित्रों के समान हैं। सित्तनवासल रॉक कट गुफाओं का निर्माण पल्लव वंश के राजा महेंद्रवर्मन प्रथम द्वारा करवाया गया था, और बाद में 7वीं शताब्दी में पांड्य शासकों द्वारा इसका जीर्णोद्धार किया गया था।

चित्रों की विशेषताएं:

1. सित्तनवासल चित्रों को दीवारों, छत और स्तंभों पर चित्रित किया गया है।
2. सित्तनवासल चित्रकला के चित्रों का सबसे सामान्य विषय जैन समवसरण (प्रवचन हॉल) है।

सित्तनवासल गुफा चित्रकला

3. चित्रकारी में प्रयुक्त रंग वनस्पति और खनिज रंगों से निकाले गए थे। यह पतले गीले चूने के प्लास्टर की सतह के साथ रंगों को मिलाकर किया गया था।
4. चित्रों को चित्रित करने के लिए प्रयुक्त रंग नारंगी, हरा, पीला, सफेद, नीला और काला है।

क्या आप जानते हैं?

समवसरण एक सुंदर हॉल है जहां तीर्थंकर केवला या कैवल्य प्राप्त करने के बाद उपदेश देते हैं। भव्य दृश्य देखने के लिए अप्सराएं, देवता और बैल व हाथी जैसे जानवर हॉल में इकट्ठा होते हैं। सित्तनवासल में समवसरण चित्रकला जैनियों के बीच एक विशेष स्थान रखती है। सित्तनवासल में चित्रों का केंद्रीय तत्व मछलियों का एक तालाब है, इस तालाब में फूल भिक्षुओं द्वारा एकत्र किए जाते हैं, और शांत स्थान हंसों, बत्तखों और मछलियों से घिरा हुआ है।

रावण छाया शैलाश्रय

रावण छाया शैलाश्रय ओडिशा के क्योंझर जिले में स्थित हैं । यह चित्र 7 वीं शताब्दी ईस्वी के हैं।

चित्रों की प्रमुख विशेषताएं:

1. इस चित्रकारी का नाम राक्षस राजा रावण की छाया को संदर्भित करता है जो एक बड़े गोलाकार पत्थर के निचले हिस्से में दिखाई देता है।
2. रावण छाया शैलाश्रय चित्रकला फ्रेस्को पेंटिंग हैं जो आधे खुले छतरी के आकार में हैं।

रावण छाया शैलाश्रय चित्रकलाह

© Study IQ Publications

पुतली कला	क्षेत्र	प्रमुख विशेषताएं
बोम्मागलट्टा	तमिलनाडु	• इनका विषय आध्यात्मिक और पौराणिक कथाओं पर आधारित होता है। • यह छड़ और स्ट्रिंग / धागा पुतलियों दोनों की तकनीकों को एक साथ जोड़ती है। • एक एकल पुतली कलाकार पूरे पुतली शो को संचालित करता है। • बोम्मालट्टा ईश्वर की पूजा अर्चना के साथ शुरू होता है और हास्य-विनोद की कहानियों के साथ चलता है। • पुतली शो मंडली में 5 से 8 सदस्य होते हैं। • पुतलियां लकड़ी से बनी होती हैं। इन्हें संचालित करने के लिये तार एक लोहे की छल्ले से बंधे होते हैं जिसे पुतली कलाकार अपने सिर पर मुकुट की तरह पहनता है। • ये पुतलियां सभी पारंपरिक भारतीय पुतली कला में सबसे बड़ी, सबसे भारी होती हैं। • ये कपड़े, लकड़ी, चमड़े या अन्य सामग्रियों से बनी होती हैं।
गोम्बेयट्टा	कर्नाटक	• इनका विषय महाभारत, रामायण और पुराणों जैसे धार्मिक ग्रंथों पर आधारित होता है। • इन्हें पारंपरिक थिएटर रूप यक्षगान के पात्रों की तरह डिजाइन किया जाता है। • पैरों, कंधों, कोहनी, कूल्हों और घुटनों पर कठपुतलियों के जोड़ होते हैं। • इन कठपुतलियों में एक प्रोप से बंधे पांच से सात तारों द्वारा मूवमेंट किया जाता है। • कठपुतलियों के कुछ जटिल गतिविधियों को एक समय में दो से तीन कठपुतली कलाकारों द्वारा किया जाता है। • यह संगीत के साथ संचालित किया जाता है जो खूबसूरती से लोक और शास्त्रीय तत्वों का मिश्रण करता है।
कलासूत्री बहौल्या	महाराष्ट्र	• यह रामायण के थीम पर आधारित होता है। • कलाकार, कठपुतली कलाकारों के परिवारों के वंशज हैं जो मूल रूप से राजस्थान और गुजरात से होते हैं। • कठपुतली कलाकार प्रदर्शन शुरू होने से पहले प्रार्थना करते हैं, जो गणेश के अपने चूहे पर सवार होने के साथ शुरू होता है। ज्ञान की देवी सरस्वती प्रकट होती हैं और भगवान गणेश के साथ नृत्य करती हैं। • प्रदर्शन का समापन शिव के बैल नंदी की सवारी करते हुए होता है। • छोटी कठपुतलियों को लकड़ी से बनाया जाता है। वे कपड़े, पगड़ी और गहने पहनते हैं। • कंधों और घुटनों से जुड़ी कठपुतलियों के पैरों से तार नहीं जुड़े होते हैं, और ये मुक्त रहते हैं। • एक गायक गीत गाता है और बारी-बारी से, तबला और झांझ बजाता है।
नूल पावाकूथु	केरल	• इनका विषय रामायण और महाभारत पर आधारित है। • कठपुतली कलाकार नायर समुदाय से होते हैं। ये कठपुतलियां एक शाही परिवार की देखभाल और संरक्षण में रहती हैं। • यह मंदिर के त्योहारों के दौरान प्रदर्शित किया जाता है। • कठपुतलियों को दो समूहों में वर्गीकृत किया गया है। एक समूह में ऐसे कठपुतलियों को शामिल किया गया है जो सामान्य लोक कथाओं को दर्शाते हैं, जबकि दूसरे का उपयोग रामायण और महाभारत जैसे पौराणिक कथाओं और महाकाव्यों के दृश्यों को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। • कठपुतली शो का शुरुआती दृश्य हास्य-विनोद से भरा होता है। • महिला चरित्र को सबसे पहले पेश किया जाता है। • शो में कोरू और उन्नाइकन नाम के दो जोकर होते हैं। • कठपुतलियों की ऊंचाई 2 से 2.5 फीट होती है। • ये कलात्मक नक्काशी और बहुरंगी चित्रों से सजी लकड़ी से बने होते हैं। • संचालन में सरलता के लिए गर्दन, हाथ, पैर और कमर पर जोड़ बनाए जाते हैं।

© Study IQ Publications

- यह कैलेंडर ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह के जन्मदिन पर आधारित है।
- यह जनवरी के पहले दिन से शुरू होने वाला एक सौर वर्ष है और इसमें 365 दिन, 5 घंटे, 48 मिनट और 46 सेकंड होते हैं।
- चूंकि इन अतिरिक्त घंटों को एक वर्ष के लिए कैलेंडर में शामिल नहीं किया जा सकता था, इसलिए अंतर्संबंध की युक्ति को अपनाया गया और हर चार साल में फरवरी माह में एक दिन जोड़ने की प्रणाली प्रचलन में आई।

क्या आप जानते हैं?

हिन्दू कैलेंडर: हिंदू वर्ष एक चंद्र वर्ष है। इसलिए एक महीने में दिनों की संख्या, इसकी कक्षा में चंद्रमा की गति के अनुसार 29 या 30 हो सकती है। प्रत्येक माह को दो पक्षों या पखवाड़ों में विभाजित किया जाता है, अर्थात शुक्ल पक्ष या अर्द्ध सौर जिसे सूद कहा जाता है और कृष्ण पक्ष या अर्द्ध चंद्र जिसे वद कहा जाता है। प्रत्येक पक्ष में पहली से 15 तारीख तक पंद्रह दिन होते हैं। अर्द्ध सौर के पंद्रहवें दिन को पूर्णिमा या पूर्ण चंद्र के दिन के रूप में जाना जाता है और अर्द्ध चंद्र के पंद्रहवें दिन को अमावस्या या नव चंद्र के दिन के रूप में जाना जाता है जो महीने का आखिरी दिन भी होता है। चंद्र प्रणाली के अनुसार एक वर्ष के दिनों की कुल संख्या 355 से 356 होती है। नक्षत्र या तारामंडल तारों का समूह है। बारह स्थान या ग्रहण या राशियाँ हैं। सूर्य एक वर्ष के दौरान इनसे होते हुए गुजरता है और इनका नाम नक्षत्रों के नाम पर रखा गया है। कुल 28 नक्षत्र या तारामंडल हैं। क्योंकि नक्षत्र आकार में भिन्न-भिन्न होते हैं अत:उन सभी में तारों की संख्या समान नहीं होती है। कुछ नक्षत्रों में तो केवल एक या दो तारे होते हैं। प्रत्येक राशि दो से तीन नक्षत्रों से मिलकर बनी होती है। हिंदू कैलेंडर सौर वर्ष को दो हिस्सों में विभाजित करता है: उत्तरायण और दक्षिणायन। उत्तरायण, मकर संक्रांति से कर्क संक्रांति तक के पहले छह महीने हैं, यानी पौष (जनवरी) से आषाढ़ (जून) तक। इसे ईश्वर का दिन कहा जाता है। दक्षिणायन जुलाई से दिसंबर तक अंतिम छह महीने होते हैं। इसे ईश्वर की रात कहा जाता है।

क्या आप जानते हैं?

पारसी कैलेंडर: भारत में पारसी समुदाय शहंशाही कैलेंडर का पालन करता है जिसमें लीप ईयर (अधि वर्ष) नहीं होता है। पारसी वर्ष में पहले ग्यारह महीनों में प्रत्येक में 30 दिन होते हैं। 12वें और अंतिम महीने में 35 दिन होते हैं, जिसमें पाँच दिन या अंत में गाथा शामिल होती है। इस प्रकार एक वर्ष में 365 दिन होते हैं।

बौद्ध कैलेंडर: बौद्ध कैलेंडर का उपयोग सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्व एशिया में किया जाता है और यह पुराने हिंदू कैलेंडर पर आधारित है। यह नक्षत्र वर्ष का उपयोग करता है। हालाँकि इसका उपयोग एक आधिकारिक कैलेंडर के रूप में नहीं किया जाता है, परन्तु बौद्ध कैलेंडर का उपयोग महत्वपूर्ण त्योहारों को दर्शाने के लिए किया जाता है।

हिब्रू कैलेंडर: हिब्रू कैलेंडर, जिसे यहूदी कैलेंडर के नाम से भी जाना जाता है, मूलत: 10 ईस्वी से पहले बनाया गया था। इसमें पहले चंद्र महीनों का उपयोग किया गया था जिसमें हर 3 से 4 वर्ष में एक अतिरिक्त महीना जोड़ा जाता था। समय के साथ, गणितीय गणनाओं ने उस प्रणाली को बदल दिया। आज, इसका उपयोग यहूदी धार्मिक अवकाशों की तारीखों को निर्धारित करने, दिन के लिए उपयुक्त धार्मिक ग्रन्थ का चयन करने और आनुष्ठानिक आयोजनों के संचालन हेतु किया जाता है।

विक्रम संवत, शक संवत, हिजरी और ग्रेगोरियन का तुलनात्मक विश्लेषण

	विक्रम संवत्	शक संवत्	हिजरी	ग्रेगोरियन
सूत्रपात	57 ईसा पूर्व.	78 ईस्वी	622 ईस्वी	45 ईसा पूर्व.
अपनाया गया	57 ईसा पूर्व.	78 ईस्वी	622 ईस्वी	1582
शुरुआत	चैत्र मास की अमावस्या के बाद पहले दिन से ही नववर्ष की शुरुआत हो जाती है?	ग्रेगोरियन लीप वर्ष को छोड़कर (जब यह 21 मार्च को शुरू होता है) प्रतिवर्ष 22 मार्च।	चंद्रमा की गति के आधार पर महीनों का आरंभ और अंत होता है।	जनवरी के पहले दिन से शुरू होता है।
दिनों की संख्या	354 दिन	365 दिन	354 दिन	365 दिन, 5 घंटे, 48 मिनट और 46 सेकंड
महीनों की संख्या	12 महीने	12 महीने	12 महीने	12 महीने
कैलेंडर का आधार	चंद्र-सौर	चंद्र-सौर	चंद्र	सौर

© Study IQ Publications